अध्याय - एक

दरियादास

बिहार राज्य के अन्तर्गत भोजपुर जिला के धरकंधा निवासी पीरनशाह के पुत्र के रूप में सन् 1674 में जनमल दरियादास उच्च कोटि के संत आ समाज सुधारक रहीं। इहाँ के सामाजिक, धार्मिक आ सांस्कृतिक आडंबरन पर करारा प्रहार करलीं। समाज में धर्म के नाम पर फइलल, जात-पात, ऊँच-नीच, हिंदू-मुसलमान जइसन सामाजिक विकृतियन के समाप्त क के सभका के ईश्वर के संतान के रूप में समान भाव से रहे के उपदेश देलीं। जदपि समाज के आडंबरवादी लोगन द्वारा इहाँ के सिद्ध संत के रूप में आदर देलस। इहाँ के शिष्यन में जात धरम आ ऊँच नीच के कवनो भेद भाव ना रहे। समाज के अछूत मुसलमान आ बाद में सवर्ण लोग तक इहाँ के लोहा मानके गुरु रूप में स्वीकार कइलस। इहाँ के लगभग बीस गो किताबन के रचना कइलीं। जवन दरिया सागर में एके जगे संग्रहित बा। आजो इहाँ के नाम पर दरिया पंथ चलेला। एह पंथ के माने वाला हजारो भक्त बाड़न। कई स्थान पर आश्रम के निर्माण भइल बा। मुख्य आश्रम इहाँ के जन्म स्थान धरकंधा आश्रम मानल जाला। 106 बरिस के दीर्घ जीवन जिअला के बाद सन् 1780 में दरिया साहेब के देहावसान भइल। सामाजिक समरसता आ सांप्रदायिक सद्भावना स्थापित करे वाला संत कबीरदास दादू रैदास बगैरह के कोटि में इहों के समादृत बानी।

विषय प्रवेश

संत कवि दरियादास एह संकलित पदन में निरगुन ब्रह्म के सर्व व्यापकता पर प्रकाश डलले बानी। इहाँ के कहनाम बा कि भीतर के जमल मइल के धोअला बिना ऊपरी तन के साफ कइला से सत्पुरुष पर माया के असर नइखे, बाकिर सभे देवता, जोगी, जती, त्रिदेव आदि माया के फेर में झूल रहल बाड़न। इंगला पिंगला आ सुषुम्ना नाड़ी के माध्यम से सुकृत द्वारा बतावल विधि से ब्रह्म के जानल जा सकेला। शब्द तत्व के महत्त्व पर दरिया साहेब प्रकाश डलले बानी। तन के महल में रहे वाला हरि के जुगुति से प्राप्त कहल जा सकेला। एही तथ्य के बतावे के कोशिश एह पदन में कहल गइल बा।

1. पद

भीतरि मैलि चहल कै लागी, ऊपर तन का धोवे है।।
अवगति मुरति महल के भीतर, बा का पंथन जोवै है।।
जुगुति बिना कोई भेद न पावैं, साधु संगति का गोबै है।।
कह दरिया कुटने बे गीदी, सीस पटकि का रौबे है।।

2. पद

सत सुकृत दूनों खंभा हो, सुखमनि लागलि डारि।
उरध उरध दूनों मचवा हो, इंगला पिंगला झकझोर।।
कौन सखी सुख बिलसै हो, कौन सखी दुख साथ।
कौन सखिया सुहागिनी हो, कौन कमल गहि हाथ।।
सत सनहे सुख बिलसै हो, कपट करम दुख साथ।
पिया मुख सखिया सुहागिनि हो, राधा कमल गहि हाथ।।
कौन झुलावै कौन झूलहिं हो, कौन बैठलि खाट।
सत्त पुरुष नहिं झूलहिं हो, कुमति रोके बाट।।
सुन नर मुनि सब झूलहिं हो, झूलहिं तीनि देव।
गनपति फनपति झूलहिं हो, जोगि जती सुकदेव।।
जीब संतु सब झूलहिं हो, कोई कहै न संदेस।।
सत्त शब्द जिन पावल हो, भयो निर्मल दास।
कहै दरिया दर देखिय हो, देखिय जाय पुरुष के पास।।

DIEL SOLUTIONS ABSOC PATNA

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संत आ सुकृत दूनो खंभा में कवन चीज के डोर लागल रहे ?
2. दरिया साहेब केकरा के निर्मल मनले बानी ?
3. अवगति मूरत के निवास कहाँ बा ?
4. कवना सखि के सुहागिन मानल गइल बा -
   (क) राधा नियन हाथ में कृष्ण के प्रतीक कमल लेवे वाली के,
   (ख) सुख विलास में मगन रहे वाली के,
   (ग) पिया के करीब रहके उन्हुकर मुँह निहारे वाली के,
   (घ) पिया के खोज में दर दर ठोकर खाये वाली के,

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दरिया साहेब आंतरिक पूजा पर काहे बल देतानी ?
2. दरिया साहेब मूर्ति पूजा के विरोध काहे करत रहीं ?
3. ईश्वर प्राप्ति खातिर दरिया साहेब कवना जुगुति के बात करत बानी ?
4. माया के झूला पर के के झूलत बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दरिया साहेब के संक्षिप्त जीवन परिचय लिखीं।
2. पठित पदन के आधार पर ब्रह्म, जीव आ माया के सरूप स्पष्ट करीं।
3. दरिया साहेब द्वारा वर्णित सत्पुरुष आ सुकृत के व्याख्या प्रस्तुत करीं।
4. निर्गुन भक्ति धारा में दरिया साहेब के महत्व पर प्रकाश डालीं।

परियोजना

1. दरियापंथ पर एगो निबन्ध तैयार करीं।
2. दरियादासी मठ के वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालीं।

भाषा अध्ययन

1. नीचे लिखल शब्दन के वाक्य में प्रयोग करीं -
   (क) सुकृत
   (ख) कुमति
   (ग) सनेह
   (घ) सुहागिनी
2. नीचे लिखल शब्दन के विपरीतार्थक शब्द लिखीं -
   (क) सत
   (ख) सुख
   (ग) कपट
   (घ) जीव
   (ङ) निर्मल
   (च) भीतर
   (छ) भेद
   (ज) संगति
   (झ) ऊपर
   (ञ) गहि

शब्द भंडार

1

मैलि	-	गंदगी (मइल)
चहल	-	जमके (गहरा)
अवगति	-	ईश्वर
जोवै	-	जोहल, खोजल
जुगुति	-	उपाय
गोवै	-	छिपावल

2

सत	-	ईश्वर
सुकृत	-	ईश्वर के दूत
सुखमनि	-	सुषुम्ना नाड़ी
डोरि	-	धागा
उरध उरध	-	उचक उचक के (उर्ध्वगामी)
इंगला	-	नाड़ी के नाम

पिंगला	-	नाड़ी के नाम
बिलसै	-	प्राप्त करे
खाट	-	खटिया
तीनिदेव	-	ब्रह्म, विष्णु, शंकर
गनपति	-	गणेश
फनपति	-	शेषनाग
निर्मल	-	स्वच्छ (विकाररहित)
दर	-	ईश्वर के घर

पाठ से बहरी के चीज

नीचे दीहल पद्य के पढ़ के सवालन के जवाब दीं।

मितऊ देहला न जगाय, निंदिया बैरिन भैली ॥ टेक ॥
की तो जागै रोगी भोगी, की चाकर की चोर,
की तो जागै संत विरहिया, भजन गुरु के होय ॥ 1 ॥
स्वारथ लागि सभै मिलि जागै, बिन स्वारथ ना कोय,
परस्वारथ को वह नर जागै, जापर किरपा गुरु की होय ॥ 2 ॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय,
ग्यान खड़ग लिये पलटू जागै, होनी होय सो होय ॥ 3 ॥

सवाल

1. ऊपर के पद केकर लिखल ह ? बताई ?
2. दीहल पद्य के भाव अपना शब्द में लिखीं।
3. पद्य के अपना वर्ग के साथियन के साथ सामूहिक पाठ करीं।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

शब्द भंडार

बैरिन	-	दुश्मन
मितऊ	-	मित, मित्र
चाकर	-	चाकरी करेवाला, नौकर